॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतसंवर्धन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

वर्ष - प्रथम • वि.सं. २०७४ • अंक - ३ फरवरी २०१८

वर्तमान समय में श्रुत की भूमिका

मुनिश्री वैराग्यरतिविजयजी गणी

जिनशासन एक वृक्ष की तरह है जिसकी हम पूजा करते हैं। हमारा जीवन इस वृक्ष के उपर निर्भर है। उस वृक्ष का स्कन्ध साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप संघ है। बहुत सारी संस्थाएं उसके पत्ते हैं। उससे आचार के फूल निकलते है। उससे भावरूप फल पैदा होता है। जो भी इसके पास आता है कुछ ना कुछ पाकर के जाता है। किसी भी पेड का आधार होता है उसका मूल। जिनशासन का मूल है सम्यग्दर्शन। वृक्ष को पनपने के लिए भूमि चाहिए वह है- चारित्र। वृक्ष के जीवित रहने के तीन स्रोत है- हवा, पानी और प्रकाश। जिनशासन के जीवित रहने के तीन स्रोत है। श्रद्धा, क्रिया और ज्ञान। श्रद्धा का प्रतीक मंदिर है। चारित्र का प्रतीक हमारे साधु, साध्वीजी भगवंत है। ज्ञान का प्रतीक **श्रुतज्ञान** है। उसका स्रोत है-हस्तप्रत। आज दो क्षेत्रों में हम बहुत ही आगे बढ रहे हैं। एक, श्रद्धा के केंद्र मंदिर बहुत बन रहे हैं। दो, चारित्र के क्षेत्र में प्रगति हो रही हैं। सतरा हजार महाराज साहब आज इस धरती के उपर है। यह गौरव लेने जैसी घटना है। इतनी सारी प्रगति हो गयी लेकिन ज्ञान के क्षेत्र में प्रगति प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। क्या आपको पता है श्रुतज्ञान के विषय में हमारी शक्ति क्या है? सरकारी आंकडें ये बता रहे है कि **इस विश्व में किसी एक धर्म के पास यदि सबसे ज्यादा हस्तप्रत = हाथ से लिखा हुआ ज्ञान हो तो वह जैन धर्म के पास है।** हम दो क्षेत्र में सशक्त है अब ये तीसरे क्षेत्र को सशक्त करने की जरुरत है। इन शास्त्रों को यदि बचाए रखना हैं तो उन शास्त्रों के उपर हमें काम करना पडेगा। हम हमारा ज्ञान भूल रहे हैं। अगर ये खतम हो गया तो इतने सारे शास्त्रों का ह्रास हो जाएगा। ये एक चिंता का विषय है और उसकी इस चिंता में से ही श्रुतभवन का प्रादुर्भाव हुआ है। ३०० साल के बाद यदि कोई उपाध्याय यशोविजयजी पैदा हुए तो उनको कोई शास्त्र की कमी नहीं होनी चाहिए। उनकी आँखों में आंसु नहीं होनी चाहिए कि मेरे पास पढने के लिए कोई शास्त्र नहीं है। श्रुतभवन उनके लिए है। और इसीलिए इन शास्त्रों को अगली पीढी तक पहुँचाना जरुरी है। महाराज साहब पढ सकेंगे तो ही हमारे पास ये ज्ञान उपलब्ध रहेगा। यदि महाराज साहब के पास ज्ञान नहीं रहेगा तो हमारी हालत क्या होगी ये हम कल्पना भी नहीं कर सकते। ज्ञान जीवित रहेगा तो श्रद्धा जीवित रहेगी। ज्ञान जीवित रहेगा तो ही आचार जीवित रहेगा। ज्ञान नहीं रहेगा तो श्रद्धा और चारित्र दोनों निर्बल हो जाएँगे। अत एव हमें श्रुत को आगे बढाना है। इतना ही नहीं उसमें प्रविष्ट अशुद्धियों को भी निकालनी है। यही श्रुतभवन का मुख्य कार्य है। इस को समझना जरुरी है। महाराज साहब जब कोई भी शास्त्र बनाते है तब उसकी प्रथम प्रति स्वयं लिखते है या लिखवाते है। जब उसकी प्रतिलिपि (कॉपी) होती है तो उस में अशुद्धियों की संभावना अधिक होती है। एक शास्त्र ही अनेक पांडुलिपियां हुई। वे अशुद्धि बहुल थी। अब इन प्रतियों से अशुद्धियों को निकाला नहीं गया तो क्या होगा? जिस अर्थ को ध्यान में रखकर के कर्ता ने लिखा है उसका अलग अर्थ हो जाएगा। श्रुतभवन में शास्त्रों का शुद्धिकरण किया जाता है।

ऐसा अंदाज है कि हमारे पास तीस हजार मूल शास्त्र है। उनकी बीस लाख पांडुलिपियां है। हमें इन सभी पांडुलिपियों का एकत्रित एवं प्रामाणिक सूचिपत्र तैयार करना है। जब तक यह कार्य पूर्ण नहीं होता तब तक हम उपलब्ध सूचिपत्र के सहारे प्रगट और अप्रगट पांडुलिपियों का विभाग करते हैं। तत्पश्चात् लिप्यंतर, पाठांतर, संशोधन और संपादन होता है। यह काम न मेरा है, न तुम्हारा है। यह काम भगवान का है, यह काम श्रुत परंपरा के संवाहक श्रमण संघ का है। हमारी ज्ञानसंपदा को भविष्य की पीढी तक पहुँचाने के लक्ष्य के साथ हम इस यज्ञ में जुडे हैं। आप की शक्ति, आप की संपत्ति, आपका समय यदि आप उसमें दोगे तो यह यज्ञ शीघ्र पूरा होगा।

वर्तमान समय में श्रुत की उपयोगिता

डॉ. जितेंद्र बी शाह

(श्रुतसंवाद में प्रस्तुत वक्तव्य का सारांश ७-१-२०१८)

पूर्वकाल में पुणे पश्चिम भारत का काशी माना जाता था। इस विद्या के नगर में **श्रुतभवन** जैसा एक सुंदर संस्थान यह गौरव लेने जैसी बात है। आज भारत देश में भारतीय विद्या के प्रति लोगों की उदासीनता बढती जा रही है ऐसी स्थिति में इस नगर में श्रुतभवन का होना अपने आप में बहुत बडी बात है और पुणे के नगरजनों के लिए ये बहुत ही गौरव लेने जैसी बात है।

आज पूरे विश्व में जैन धर्म की प्रतिष्ठा का कारण हमारा श्रुतज्ञान है। अंग्रेजों के जमाने में जो युरोपीय विद्वान भारतीय शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए भारत आया करते थे। उन के आने से हमारी आँखे खुली कि हमारे शास्त्रों में कुछ पडा हुआ है। ये लोग क्यों यहां आ रहे हैं? इसमें क्या खोज रहे हैं? वे विद्या खोज रहे थे। हमारे शास्त्रों को देखकर वे अभिभूत हो गये। उन्हें यह प्रतीत हुआ कि भारत में शेक्सपिअर से भी महान विद्वान् हुए हैं। भारत के प्रति उनकी रुचि बढी। उन्होंने भारतीय शास्त्रों का अध्ययन प्रारंभ किया। हमारे शास्त्रों को देखकर के विद्वानों को बहुत अहोभाव हुआ। पं. श्री इंद्रचंद्र शास्त्री ने महो.श्री यशोविजयजी रचित जैन तर्कभाषा का अनुवाद करते हुए कहा कि **यदि यह यशोविजयजी युरोप में पैदा हुए होते तो प्रत्येक युरोपीयन अपने घर के प्रवेशद्वार पर उनके नाम के तोरण बांधते।**

आठवी शताब्दी में ह्यु एन त्संग दस हजार मील का प्रवास करते हुए चुनचुनकर ६८० ग्रंथ भारत से चीन ले गया। पुरे चीन में उन ग्रंथों का अध्ययन हुआ और आज भी चीन कह रहा है कि **हमारे ये ग्रंथ ही हमारी संस्कृति की धरोहर हैं,** इसी ग्रंथों के आधार पर हम जी रहे हैं। इन ग्रंथों के कारण ही भारत देश विश्व का गुरु था। आज हमारे सामने बडी चुनौती है कि हम अपने ग्रंथों को सुरक्षित कैसे करें। हमारे पूर्वजों ने इन ग्रंथों की सुरक्षा के लिए अपने सर्वस्व का समर्पण और प्राणों का तर्पण किया है। बरोडा में सयाजीराव गायकवाड का राज्य था। वहां पंडितों ने अपनी पांडुलिपियां गायकवाड ओरिएंटल रिसर्च इन्स्टिट्युट को भेंट की। करीब अठारह से बीस हजार पांडुलिपियां इकट्ठी हो गयी। अब समस्या आई कि इनकी सुरक्षा कैसे की जाए। सभी लोग गायकवाड महाराजा के पास गये और जाकर के उन्होंने अपनी समस्या बताई। तो गायकवाड ने कहा कि इसमें चिंता करने की क्या बात है? कल ही हमने इग्लंड से हमारे गहनों की रक्षा के लिए मूल्यवान जलप्रतिरोधक(वॉटरप्रूफ), अग्निप्रतिरोधक (फायरप्रुफ) तिजोरियां मंगवाई है, वो आप ले जाओ, उसी में ग्रंथ रखो। ये भारत देश है। ये भारतीय लोग हैं। ये ज्ञान की रक्षा की बात है।

ज्ञान की सुरक्षा के बाद जो सबसे बडा कार्य है- ज्ञान को शुद्ध करना। एक अक्षर भी इधर से उधर हो जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। मुनिश्री पुण्यविजयजी भी बार बार कहा करते थे कि **शास्त्रों का संशोधन करना बहुत ही कठिन कार्य है, यह तो मिट्टी धोने जैसा काम है।** मिट्टी को धोने से केवल गंदगी ही हाथ लगती है। इन शास्त्रों के अध्ययन के द्वारा सेंकडो बरसों से जमी हुई धूल को दूर करनी पडती है। छोटे छोटे अक्षरों में लिखे हुए पाठों को पढना बहुत ही चुनौती वाला काम होता है। यह काम श्रुतभवन द्वारा हो रहा है। श्रुतभवन ने जो काम प्रारंभ किया है वो पहले भी हुआ है लेकिन पहले हमारे मुनि, हमारे विद्वान् अकेले करते थे। जीवनभर में दो-पांच-दस ग्रंथों का संशोधन कर पाते थे। हमारे शासन का ये भाग्योदय समझो की मुनि श्री **वैराग्यरतिवि.** महाराज के मन में एक भाव पैदा हुआ कि जो काम हमारे विद्वान् एक जीवन में नहीं कर पाये हैं वैसे काम हम यथाशीघ्र कर लें। और मुनिश्री ने ये काम पुणे के धरती पर प्रारंभ किया।

श्रुतभवन जैनशासन का भविष्य है। वह हमें आज निर्मित करना है। हमें आज संकल्प करना है कि श्रुत के लिए जो लोग अपने जीवन की आहुति दे रहे हैं उनके लिए हम तैयार रहें। मुनिश्री ने इस काम के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। वे केवल अकेले एक मशाल लेकर निकल पडे हैं। कभी सोचा नहीं कि कौन आएगा, कौन नहीं आएगा। पर धीरे धीरे लोग जुडते गए। उन्होंने विद्वानों को तैयार करने का काम प्रारंभ किया। वे युवाओं को बिठाकर के पढाते हैं। अनेक प्रकार के प्रलोभनों को छोडकर इस विद्या को पढना-जिस विद्या में केवल अपनी सभी प्रकार की इच्छाओं की आहुति देनी पडती है वैसी विद्या पढना-बहुत कठिन है। मुनिश्री ही ऐसा काम कर सकते हैं और ऐसे युवान् ही ऐसा कर सकते हैं। हम लोग नहीं कर सकते हैं। जैन धर्म के शास्त्र ऐसे वैज्ञानिक रहस्यों से भरे हुए हैं। ऐसे अनेक रहस्यों से भरे हुए शास्त्रों को शुद्ध करना, सुरक्षित करना, प्रकाशित करना, लोगों तक पहुँचाना और पूरे विश्व में इस ज्ञान की ज्योत का प्रकाश फैलाना श्रुतभवन के द्वारा हो रहा है। ऐसे कार्य के लिए हमें गौरव होना चाहिए।

कोलकाता में डॉ. सत्येंद्रनाथ बोस नाम के बडे वैज्ञानिक थे। उन्होंने एक जगह भगवतीसूत्र में कथित पुद्गल की व्याख्या पढी। उस अद्भुत व्याख्या को पढकर वे खुश हो गये। उस पर उन्होंने लेख लिखा और आइन्स्टाईन को भेजा। लेख पढते ही आइन्स्टाईन अपने कुर्सी से खडे हो गये। उन्होंने कहा कि आज तक (मॅटर) के बारे में मैं नहीं सोच पाया था वो भारत में बैठे इस वैज्ञानिक ने सोचा है। आइन्स्टाईन ने सत्येंद्रनाथ बोस को एक पत्र लिखा कि आपकी खोज अद्भुत है। आज तक किसी ने ये खोज नहीं की है। इस खोज के आधार पर पूरे विश्व की स्थिति बदल सकती है। विश्व का सबसे बडे वैज्ञानिक ने डॉ. सत्येंद्रनाथ बोस को लिखा कि मेरी एक विनति है यदि आपकी अनुमति हो तो यह लेख मैं मेरे नाम से प्रकाशित करना चाहता हुँ। और आइन्स्टाईन ने उस लेख का जर्मन भाषा में अनुवाद करके संशोधन पत्रिका में छपवाया और वैज्ञानिकों ने आइन्स्टाईन को बहुत बडा सम्मान दिया कि मॅटर की व्याख्या जो आज तक हम सोच रहे थे उससे कई गुना अधिक इस व्याख्या में है। अभी एक जो परमाणु के बारे में मुव्हमेंट चली थी बोस शब्द जो उसमें प्रयोग हुआ है वो बोस ये सत्येंद्रनाथ बोस के स्मृति में उसमें रखा गया था। ये हमारे शास्त्र की कमाल है। हमारे शास्त्र क्या है? हमारे शास्त्र में क्या भरा पडा है? हमे कुछ पता नहीं है। मैं सबसे बडा दुःखी हुँ, कभी कभी रोता भी हुँ कि इतनी ज्ञान की संपत्ति होने पर भी हमें कुछ भी चिंता नहीं है। गौरव भी नहीं है।

समाचार

दि.७ जनवरी २०१८ के दिन श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन द्वारा **श्रुतसंवाद** कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसका मुख्य उद्देश श्रुत की वर्तमान स्थिति एवं उसकी सुरक्षा करने के लिए उपयुक्त विचारों का चिंतन करना था। इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथी के रूप में एल. डी. इन्डोलोजी, अहमदाबाद के निर्देशक डॉ. जितेंद्र बी. शाह थे। इस कार्यक्रम में पूना के विभिन्न संघों के ट्रस्टी तथा कार्यकर्ताओं का उपस्थिति रही। अनेक मान्यवरों ने श्रुतभवन के इस अद्भुत कार्यों की प्रशंसा की और इस यज्ञ में तन-मन-धन से जुडने का संकल्प किया। अनेक संघों ने ज्ञानद्रव्य द्वारा आर्थिक सहयोग की घोषणा की। अनेक मान्यवरों ने व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग की घोषणा की। इस कार्यक्रम में श्रुतज्ञान संबंधी साधनों का प्रदर्शन आयोजित किया था। जिसमें ताडपत्रीय हस्तप्रत, भूर्जपत्र तथा कागज की हस्तलिखित प्रतियां, हस्तप्रत लेखन सामग्री तथा संस्था द्वारा प्रकाशित प्रगट-अप्रगट संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिंदी, मराठी आदि भाषाओं के लगभग ५० से अधिक ग्रंथों का समावेश था।

श्रुतसंवाद में उपस्थित महाजन

श्री वर्धमान जैन

(प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटंट)

मुझे नहीं लगता कि वो दिन दूर है कि यह कार्य अपने ही जीवन काल में हम पूरा होते देखेंगे। आज श्रुतभवन के लिए मैं अपने आपको समर्पित करता हुँ।

श्रुतभवन का असली इम्तेहान तो अभी बाकी है।
श्रुतभवन की उडान तो अभी बाकी है।
अभी तो नापी है मुट्ठी भर ज़मी।
सारा आसमा तो अभी बाकी है।

श्री दीपक शाह

(अध्यक्ष, पार्श्वप्रज्ञालय ज्ञानसंस्कार मंदिर, तळेगांव)

सोच को बदलो तो सितारे बदलतें हैं,
नज़र को बदलो तो नज़ारे बदलते हैं।
कश्तियाँ बदलने की जरुरत नहीं है,
सिर्फ दिशाओं को बदलो तो किनारे बदलते हैं।

साहेब जी अगर आप मुझे मौका दो तो मैं जरुर इस कार्य में खुद सम्मिलित होना चाहता हुँ। अच्छे स्कॉलर निर्मित होंगे तो आने वाली पीढी के लिए बहुत जरुरी होगा।

श्री विलास राठोड

(अध्यक्ष, वर्धमान प्रतिष्ठान)

यह बहुत अनमोल कार्य है। मै आपको विनंति करता हुँ कि वर्धमान प्रतिष्ठान शिवाजीनगर की जगह में काम करने के लिए अनुरोध है। श्रुतभवन को सभी लोगों ने सहयोग करना चाहिए।

श्री ओमप्रकाश रांका

(रांका ज्वेलर्स)

श्रुतभवन से मैं काफी सालों से जुडा हुँ। मैंने महाराज साहब को भी पंद्रह दिन पहले ही वचन दिया है कि मैं आजीवन आपके साथ हुँ। जब कोई कमी पडे तो मुझे याद कर देना। मैं कभी भी तैयार हुँ।

प.पू.आ.श्री. **वि.राजरत्नसू.**म.सा. की निश्रा में नागेश्वर तीर्थधाम में आयोजित अंजनशलाका महोत्सव में **त्रिषष्टिशलाकापुरुषविचार** ग्रंथ एवं **'मारो प्रिय श्लोक'** का संघार्पण भगवान के मातापिता के हस्तों से हुआ।

प.पू.आ.श्री. **वि.यशोवर्मसूरिजी.**म.सा. के ५४ वे दीक्षादिन निमित्त वापी में आयोजित कार्यक्रम में **त्रिषष्टिशलाकापुरुषविचार** ग्रंथ का संघार्पण हुआ।

श्रुतभवन संशोधन केंद्र कार्य विवरण

कारकप्रकरणसंग्रह के अंतर्गत कारकसंबंधी १७ अप्रकट कृतियाँ है। उनमें से पांच कृतियों का संपादन संपन्न हुआ। शेष कृतियाँ, **लोकप्रकाश** एवं **श्रेयांसजिनचरित** का संपादन प्रवर्तमान है। **सा.श्री मधुरहंसाश्रीजी** अढार पापस्थानक विषयक गुजराती पद्यकृतियों का संकलन कर रहे हैं।

पंडित **आशाधर** विरचित **त्रिषष्टिस्मृति** ग्रंथ, **श्रीकल्याणविजयशिष्य** विरचित **त्रिषष्टिशलाकापुरुषविचार** ग्रंथ, आचार्य **श्रीनरेंद्रप्रभसूरिजी** रचित **दृष्टांतशत** (हिंदी अनुवाद सहित) का संपादन संपन्न हुआ और प्रकाशन के लिए सज्ज है।

'बृहत् टिप्पनिका' भारत का सर्वप्रथम सूचिपत्र गिना जाता है। इस कृति का ११ परिशिष्टों के साथ विशिष्ट संपादन संपन्न हुआ। **'जैन कृति कृतिकार कोश'** का कार्य गतिशील है।

विशेष उपलब्धि : प.पू.आ.श्री.वि.**तीर्थभद्रसू.**म.सा. और उनका शिष्य परिवार प्राचीन तीर्थसंबंधी स्तोत्र, स्तवन, चैत्यपरिपाटी का संग्रहात्मक ग्रंथ संपादित कर रहे हैं। श्रुतभवन के सद्भाग्य से इस विषय की जानकारी के संकलन के लिए उनका यहाँ आगमन हुआ। वर्धमान जिनरत्नकोश विभाग से लगभग १० दिन में ३०० केटलोग के ४ लाख ५० हजार हस्तलिखितों में से ५००० से अधिक हस्तलिखितों की माहिती उपलब्ध करवाने का लाभ मिला।

आगामी प्रकाशन

'मारो प्रिय श्लोक' इस गुजराती किताब में ३३ महात्माओं के लेखों का संग्रह है। **'मृत्युनुं मैनेजमेंट'** एवं **'आनंद अंग अंग जाग्यो'** ये दो किताबें प्रकाशनाधीन है। 'आनंद अंग अंग जाग्यो' में मुनि **श्रीप्रशमरतिविजयजी** म. के गीतों का संकलन है।

समाचार : श्रुतभवन में प.पू.आ.श्री.**कलाप्रभसागरसू.**म.सा.(अंचलगच्छ), प.पू.आ.श्री. वि.**भव्यदर्शनसू.**म.सा., **श्रीनिरंजनमुनिजी** म. (लिंबडी अजरामर संप्रदाय), प.पू.आ.श्री.**तत्त्वदर्शनसू.**म.सा. के शिष्य मु. **श्रीशीलदर्शनवि.**म.सा., सा. श्री **धारणाश्रीजी** म., सा. श्री **आराधनाजी** महासती का पदार्पण हुआ। पू.मुनि **श्रीप्रशमरतिविजयजी** म. विदर्भ में विचरण कर रहें है। वहाँ उनकी प्रेरणा से एकाधिक विहारधामों का निर्माण हो रहा है। पू.सा.**श्रीजिनरत्नाश्रीजी** म. आदि वापी में विचरण कर रहें हैं।

अभिप्राय

You are preserving the light from the East to future generations. Congratulations and blessings are showered upon you.

— **Mrs. Heather Brown**
Assistant Director, Govt. Institute Art Lab, Adelaide, Australia.

प्रभु ने मुझसे पूछा-
'वत्स! मेरी जरुरत कब तक है?'
मैंने आंसु की बूंद समंदर में डाली और कहा-
'यह आंसु वापस न मिले तब तक'

- पू.मु.श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

प्रबंध संपादक
गौरव के. शाह (९८३३१३९८८३)

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From
Shrutbhavan Research Centre,
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org